मोह भंग

धूप की हल्की तपिश जिस्म को सेंक देने लगी तो नीता की ऑख लग गई। सबसे छोटे बेटे प्रवेश की शादी के बाद गिन्नी ने घर की जिम्मेवारी ठीक से ले ली थी। बड़ी बहू अमेरिका की थी .उसे भारत आने का कोई शौक नहीं था। हॉ. मॅझली यहीं की थी. लेकिन आशीष के कुछ दोस्त ऑस्ट्रेलिया चले गए . तो उसने भी वहीं जाने की ज़िद ठान ली। अच्छी खासी प्रैक्टिस छोड़कर वे भी वहीं बसने चले गए थे। पापा का साथ दिया. सबसे छोटे बेटे प्रवेश ने। अन्त में गिन्नी जैसी बहू पाकर नीता संतुष्ट थी। अचानक नींद में ही ऐसी खॉसी मचली कि नीता को एमरजैंसी में दाखिल कराना पड़ा। दमा बिगड़ने पर जानलेवा बन जाता है। कुछ ऐसे ही हालात बन गए थे। रघु और नीता की जोड़ी 'लव बर्ड्स' के नाम से जानी जाती थी। उनकी आपसी समझ व प्रेम की मिसाल दी जाती थी .जानने वालों में। आज रघु की नीता उसके समक्ष बेसुध पड़ी थी। उसकी ओर देख-देख कर रघु का दिल डूब रहा था। पिछले पैंतीस वर्षो से दोनो का दिन -रात का साथ था। जीवन के ढेरों उतार- चढ़ाव दोनो ने साथ- साथ देखे थे। फिर आज .... आज रघु क्या करे.... ?

विरह- पीड़ा सहने के विचार मात्र से रघु के मन में एक अंजाना भय घर कर रहा था। नीता का विछोह उसके लिए अत्यंत पीड़ादायी है। इसकी कल्पना से ही उसका सारा शरीर सिहर उठा। क्या नीता का साथ किसी भी क्षण समाप्त हो जाएगा ?रघु को चारों ओर से काले -काले साये अपने पर हावी होते दिखने लगे। अपने निराशावादी- दृष्टिकोण से घवराकर उसने नीता के पास और पास हो .उसका हाथ कस कर उकड़ लिया। यदि सावित्री अपने सत्यवान को मौत के मुॅह से वापिस ला सकती थी. तो क्या ...क्या वो नहीं? वह बैठा अपलक नीता को निहारता रहा। उसके भीतर के सन्नाटों से रघु को अपने लिए एक पुकार सुनाई दे रही थी. जिसे वह अंतहीन दूरी से सुन सकता था। नीता की बंद ऑखों में पलकों के नीचे पीड़ा ने डेरा डाल लिया था। जब वह बीच- बीच में कराहती तो रघु का सांत्वना व प्यार भरा स्पर्श उसे अपने अंग- संग होने का एहसास दिलाता। वह उसे जताता कि वो उसकी पीड़ा भी उसके साथ जी रहा है। नीता बीच -बीच में अपने बोझिल पलकों के किवाड़ खोलती तो उनमें छिपे निर्मल -जल के कुछ मोती उसकी ऑखों की कोर से बाहर ढुलक पड़ते और वह ऐसे मुस्करा पड़ती जैसे बारिश के बाद खिली हरी दूब !

कुछ नई दवाइयॉ दी गई. पर सॉस ठीक नहीं चलती थी। दिन- रात के लिए ऑक्सीजन लग गई थी। ग्लूकोज़ भी चढ़ाया जा रहा था। अपना काम- काज. खाना- पीना. सैर सभी कुछ भूलकर रघु नीता के सिरहाने बैठ गया। नीता की हालत में कोई सुधार नज़र नहीं आ रहा था। प्रेम व सेवा से गिन्नी ने सास का मन जीत लिया था। दोनो में बहुत प्यार था। सा वह और प्रवेश भी दुखी थे। मॉ को देखकर बार- बार उनकी ऑखें भर आती थीं। प्रवेश ने अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया दोनो भाइयों को फोन करके मॉ के विषय में बताया। विनीष व आशीष सुनते ही मॉ के प्यार में तड़प उठे। उन्होंने प्रवेश को सांत्वना दी कि धीरज रखे. मॉ ठीक हो जाएगी। फोन पर सभी रो रहे थे। वे उसी दिन वहॉ से चल पड़े। मॉ का प्यार तो सबके नाड़ू की डोर से सीधा जुड़ा था।

पापा को बताया कि सब आ रहे हैं। रघु ने सोचा कि सारे बच्चे क्या आखिरी बार मॉ से मिलेंगे। क्या फिर कभी उन्हें उनकी मॉ नहीं मिलेगी। उससे अपने बच्चों के दुख की कल्पना भी असह्य थी। दुखातिरेक के कारण बिन मॉ के बच्चों के दुख का वह सोच ही नहीं पा रहा था। बेटी अनन्या परिवार सहित उसी दिन पहुॅच गई थी। उसके ऑसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। वह हर वक्त पापा के साथ- साथ थी। देखने आए कुछ बुजुर्गो ने सलाह दी तो. गंगा जल मंगा लिया गया। एक- एक बूॅद नीता के मुॅह में अनन्या डालती रही। अमृतवाणी के पाठ की कसैट लगा दी गई। अस्पताल देखने आने वालों का तॉता बॅध गया। दुख की रातें बड़ी लम्बी ,मीलों का सफ़र तय

©Veena Vij

करती लगती हैं। काटे नहीं कटती हैं।...सो ऑखों में सबकी रात कटी।चारों ओर भयानक मौत सा सन्नाटा फैला हुआ था।कोई किसी से बात नहीं कर रहा था।अगले दिन रात को अमेरिका से विनीश व रूहेला दोनो बच्चों के साथ पहुॅचे।विनीश मॉ के पैरों से लिपटकर फूट- फूट कर रोया।सभी रो रहे थे।कहीं भी आशा की किरण नहीं दिखाई दे रही थी।आधी रात को आशीष व शुचि भी बेटे के साथ आ पहुॅचे।मॉ की हालत देखकर आशीष मॉ के मुॅह से मुॅह जोड़कर रोने व मॉ को प्यार करने लगा।बच्चों ने मॉ को सदैव सुन्दर व स्मार्ट बने ही देखा था।मॉ की बेबसी व लाचारी किसी के गले नहीं उतर रही थी।डॉक्टर्स ने तो कह ही दिया था कि जिन्हें आप बुलाना चाहते हैं, बुला लें...बचने की उम्मीद नहीं है।सो प्रवेश ने रोते हुए सब रिश्तेदारों व अपनो को फोन कर दिए थे। वे सब भी पहुॅच रहे थे।गिन्नी ने ड्राइंगरूम का फर्नीचर उठवा दिया —दरियॉ बिछवा दीं।सबके बच्चे इकट्ठे होकर धमा- चौकड़ी मचा रहे थे।गिन्नी सबको सॅभाल रही थी।प्रवेश व उसके कुछ दोस्तों ने खाने का व बिस्तरों का इंतज़ाम अपने जिम्मे लिया।आखीरकार इतने लोगों को सॅभालना भी तो था।पापा, अनन्या व दोनो भाई भी वहीं थे।तीसरी रात आ चली थी, नीता को होश नहीं आया था।और डॉक्टर्स सलाह मशवरा करने पहुॅच गए थे।बोले कि बौडी रिसपौंड नहीं कर रही है।ईश्वर का जाप चल रहा था।लोगों की भीड़ बढ़ रही थी।किसी ने काले तिल को हाथ लगवाकर दान करवाया, तो किसीने काली साबत दाल ;.जिससे प्राण आसानी से निकल जाएं।पर हाय री हमारी सामाजिक एवम् दकियानूसी परम्पराएं !.अभी प्राण जाने का समय नहीं आया था तो कैसे.....?

कमरे के बाहर बहुत भीड़ थी।जितना- जितना संबंध उतना ही दुख ; उतना ही दिखावा।ज्ञात हुआ कि रघु अपनी बीमार पत्नि के पास से उठे ही नहीं, सिवाय शौच के।सो एकमत हो सब बोले कि तभी नीता के प्राण अटके पड़े हैं।अब रघु से यह कौन कहे कि कहो 'जा नीता मैंने अपने मोह से तुझे आजाद किया'।अजीब हालात हैं कि मातमपुरसी के लिए सब तैयार खड़े हैं .परन्तु मातम नहीं हो रहा।जिस मौत से सब भय खाते हैं...उसी का बेहद बेचैनी से हर पल इंतजार हो रहा है।क्या पता किस पल.... ।दिखावे के लिए हर कोई वहीं ठहरना चाहता था।वहीं कुछ कमरे भी ले लिए गए!कोई वहीं सोया, कोई घर गया।हालत न सुधरने पर स्पैशलिस्ट की टीम आई ।उन्होंने बताया कि एक नई दवाई आई है, यदि आप लिखकर दें तो आजमाया जा सकता है।रघु ने एक पल की देर किए बिना आशा की इस किरण को अपने भाग्य का एक इशारा समझा।और हामी भर दी।उसे लगा आकाश से देवगण उसकी पुकार सुनकर एकत्र होकर अमृत लेकर आए हैं। आगे, जैसी हरि इच्छा !

दवाई मॅगाकर दी गई।सब को घर जाकर इत्मीनान से सोने को कह दिया गया।रघु व अनन्या वहीं ठहरे।

बच्चे हालात से बेख़बर घर में मस्ती कर रहे थे।ज़मीन पर बिछे गद्दों की उठा पटक में लगे थे।अपने ममी पापा को आया देखकर सबने बाहर खाना खाने की फरमाईश की।दौड़ पड़ी कारें फास्ट फूड के लिए।खाने के बाद सहज भाव से आशीष बिल चुकाने लगा तो उसकी पत्नि शुचि ने कोहनी मार के उसे मना कर दिया।उसी क्षण प्रवेश ने बिल चुकाया।उसने मॅझली भाभी को इशारा करते देख लिया था।शुचि की यह हरकत उसके अंतस को ज़ख़्मी कर गई।खैर....बात को तूल देने का यह उचित समय नहीं था, इसलिए वह चुप रहा।विनीश की पत्नि रूहेमा ने पति से कहा कि फलों के एक दो टोकरे मॅगवा लो इकट्ठे बच्चे कभी भी खाने को मॉगते हैं।सुनते ही शुचि बोली "चुप बैठी रहो भाभी।प्रवेश और गिन्नी से कहो क्या लाना है।पिताजी कमाते हैं अभी, उनकी कमाई पर सब बच्चों का हक है।यहॉ इंडिया आकर घर में भी हम क्यों पैसे ख़र्च करें।"रूहेमा यह

 ©Veena Vij

सुनकर चुप बैठ गई। नौकर रामू पानी देने आ रहा था। उसने यह सारी बात सुनी। रसोई में वापिस जाकर वो धम्म से ज़मीन पर बैठकर रो पड़ा कि मॉजी अस्पताल में मौत से जूझ रही हैं। इतना ढेर सारा पैसा खर्च हो रहा है। ये औलादें..?छिः..छिः मदद करने की अपेक्षा !!क्यों आए हैं ये सब?मात्र औपचारिकता निभाने...या फिर अपने- अपने हिस्से का खर्चा करवाने। इससे अधिक वह सोच नहीं सका। उसके कानों में बहूजी की कर्कश आवाज सुनाई दी "रामू बच्चों के लिए मिल्क शेक बना लाओ।"

तभी टन् टन् टन् टन् फोन की घंटी बजी। अनन्या थी फोन पर.जोर- जोर से रोए जा रही थी। गिन्नी ने फोन उठाया। वो भी रोने लगी। उसी पैर सब अस्पताल के लिए भागे। वहॉ पंडितजी 'गीता' के आठवें अध्याय का पाठ कर रहे थे। रघु ने नीता का हाथ कसकर मुट्ठी में थामा हुआ था। बाकि सब जोर- जोर से हिचकियॉ लेकर रो रहे थे। मानो मृत -शरीर को अभी नीचे उतार देंगे. .यदि रघु हाथ छोड़ेंगे तो। अचानक विनीश ने देखा कि मॉ के पैर का अंगूठा हिला। झट वह मॉ के कान के पास जाकर बोला 'मामा!.मामा.ऑखें खोलो। देखो हम सब आए हैं। वह कभी मॉ का माथा चूमता.कभी कंधे हिलाता। जार जार रो रहा था वह दीवाना सा। और सब क्या देखते हैं कि मॉ की ऑखों से ऑसू बह निकले। विनीश ने मॉ के ऑसू भरे तपते गालों को. जो कि ऐसे गर्म हो गए थे जैसे बारिश के बाद हरी पत्तियॉ हो जाती हैं...प्यार से पोंछा। हर्षातिरेक से सब जोर जोर से ईश्वर का धन्यवाद करने लगे। रघु व बच्चों के चेहरे खुशी से चमक उठे। मॉ में प्राण संचार हो रहे हैं. देखकर प्रवेश डॉक्टर के पास भागा। लेकिन. फिर वही हालत.... । बाहर बैठे रिश्तेदार फिर काना फूसी करने लगे 'रघु नीता को छोड़ नहीं रहा.तभी प्राण जा जा कर वापिस आ रहे हैं। इसका मोह भंग होना आवश्यक है। इसने उसे प्रेमपााश में बॉधा हुआ है। भई. इस कलयुग में कहीं सावित्री की तरह सत्यवान को मौत के मुॅह से वापिस लाया जा सकता है।' प्रत्यक्ष जाकर रघु से कहने की हिम्मत कोई नहीं कर सका।

विधी के विधान में भला कौन हस्तक्षेप कर सकता है। बड़ी बेसब्री से सब होनी का तमाशा देख रहे थे। उधर बच्चों ने देखा कि पापा की ऑखों से अविरल अश्रुधाराएँ बह रही हैं। वे एकटक मॉ को देखे जा रहे थे। पास खड़ी दोनो बुआ भी पापा की हालत पर बिलख -बिलख कर रो रही थीं। चौथा दिन हो गया था. रघु को अपनी सुधि नहीं थी। न जाने ऑखों ने ऑखों को क्या मूक संदेश दिया कि मृतप्राय नीता की पलकों में स्पदंन हुआ। जिसे रघु व अनन्या ने एकसाथ नोटिस किया। आश्चर्य व हर्ष से दोनो ने एक दूसरे को पकड़ लिया। हजारों उम्मीदों के चिराग उनके भीतर जगमगा उठे।

डॉक्टर्स की टीम आ गई। वे आशान्वित हो उठे। फटाफट इंजैक्शन्स दिए। इधर सभी नीता को देखने दौड़े। नीता ने ऑखें खोलकर अपने चारों ओर देखा। यह देख डॉक्टर्स खुशी से बोले कि इनका शरीर मृत था.नई दवाई ने असर तो दिखाया ही है लेकिन आप सब के प्रेम.प्रार्थना व सेवा ने इन्हें पुनः जीवन दिया है। यह तो करिश्मा हो गया है। अभी इन्हें कुछ दिन और अस्पताल में रखना पड़ेगा। वैसे अब ये ख़तरे से बाहर हैं। सब का मुॅह मीठा कराया गया। घर में फर्नीचर पुनःसजा दिया गया। खुशी की रोशनी जगमगा उठी। रिश्तेदार भी वापिस जाने लगे थे। मानो किसी काम को अंजाम तक पहुॅचाने आए थे.परन्तु नाकामयाब होकर मायूस लौट रहे थे। रामू सुन रहा था "हम यूं ही ये ढेर सारे कपड़े लाए। अगली बार पता नहीं आना हो पाएगा भी कि नहीं?"

पापा और बच्चे सब के चेहरे चमक उठे थे। परदेसी बेटों के जाने का समय आ गया था। रघु को इंतजार था कि दोनो बेटे उसे पैसे पकड़ाएंगे। आख़ीर डॉलरों में कमाते हैं। फिर ऐसे मौकों पर ही तो बेटों का फ़र्ज़ होता है.मदद करना। उनके जाने की घड़ी आ गई। ऑखों में ऑसू

 ©Veena Vij

भरकर सबने माँ से प्यार किया। साथ ही कहा कि अपना ध्यान रखना। अब जल्दी आना नहीं होगा। दूर का मामला है। माँ अभी बात नहीं कर पाती थी सो रोते हुए सबको गले लगाया व पोते .पोतियों को छाती से चिपका लिया। रघु ने तो मानो विदाई की रस्म निभाई। अब जाकर उसका मोहभंग वास्तव में हो गया था।

नीता की बीमारी ने उसको संसारिक नातों से पहचान करवा दी थी। ज्यों ज्यों समय बीत रहा था, रघु की वितृष्णा बढ़ती जा रही थी। लेकिन..... उसका लक्ष्य, उसका प्यार, उसका जीवन साथी अब उसके साथ था।

वीणा विज 'उदित'

©Veena Vij